SEMESTER – 2

CC – 5

HISTORY OF IDEAS

(2019-2021)

E-CONTENT

UNIT – V : Liberals ✔ (i) M.K. Gandhi – State

(ii) B.R. Ambedkar – Social Justice

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेन्द्र कुमार
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना
संपर्क – 9835463960

डॉ० विद्यानन्द विधाता
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना
संपर्क – 9472084115

(i) M.K. Gandhi – State (Volume – II)

उद्देश्य :

इससे पहले आप इस इकाई के Volume – I में गाँधी जी के राज्य संबंधी विचारधाराओं में गाँधी जी के अराजकतावादी विचार, स्वराज, पंचायती राज, राजनीति का आध्यात्मिकरण, बहुमत का शासन एवं प्रतिनिधित्व से संबंधित विचारों को जाना था। इस इकाई के Volume – II में आप गाँधी जी के ट्रस्टीशिप से संबंधित विचार, राष्ट्रवाद व अंतराष्ट्रीयवाद से संबंधित विचार, परमाणु शक्ति संपन्न राज्य के बारे में,

रामराज्य की परिकल्पना के बारे में जान सकेंगे। इसके बाद अगले खंड (Volume) में सत्याग्रह से संबंधित विभिन्न तकनीकों की चर्चा करेंगे।

प्रस्तावना :

इस ईकाई के पहले खंड (Volume – I) से आप जान चुके होंगे कि किस तरह गाँधी जी ने वर्तमान परिस्थितियों का आकलन कर राज्य संबंधी अपने विचारों को सामने रखने का कार्य किया। इस खंड में आप राज्य के आर्थिक कार्यों तथा विश्व शांति व्यवस्था को स्थापित करने में राज्य की भूमिका को पढ़ेंगे। इसके अलावा इस इकाई में आप गाँधी जी के 'रामराज्य' के मूल सिद्धांतों को भी पढ़ेंगे।

गाँधी जी और राज्य से संबंधित विचार :

1. ट्रस्टीशिप :

सापेक्षिक आर्थिक समानता तथा निजी सम्पत्ति पर सीमित अंकुश के लिए गाँधी "ट्रस्टीशिप" नाम सिद्धान्त का प्रतिपादन करते है। गाँधी का कहना है कि जब पूँजीपतियों के पास आवश्यकता से ज्यादा धन हो जाए, तो उसे एक ट्रस्ट को दे देनी चाहिए और ट्रस्ट द्वारा पूँजीपतियों का प्रदत्त धन गरीबों के कल्याण में खर्च किया जाना चाहिए। इस प्रकार ट्रस्टीशिप लगभग आर्थिक समानता लाएगा तथा निजी सम्पत्ति पर भी अंकुश लगेगा।

समसामयिक समाज में गाँधी का ट्रस्टीशिप संबंधी धारणा अव्यावहारिक और अप्रसांगिक है। इतिहास इस बात का गवाह है कि पूँजीपति अपना धन गरीबों पर खर्च करने को तैयार नहीं रहे हैं और न ही ऐसे भविष्य में करने वाले हैं। अर्थशास्त्र के इस त्य को देखे कि आवश्यकताएँ अनन्त होती है। कुछ लोगों का कहना है कि गाँधी पूँजीपतियों को मार्क्सवादी तलवार से बचाने के लिए ट्रस्टीशिप का प्रतिपादन किया गया है।

2. राष्ट्रवाद व अंतराष्ट्रीयवाद :

गाँधी का राष्ट्रवाद संकीर्ण एवं उग्र राष्ट्रवाद न होकर व्यापक एवं सहिष्णु राष्ट्रवाद है। गाँधी को राष्ट्रभाषा, राष्ट्रीय पोशाक, राष्ट्रीय शिक्षा में अटूट आस्था थी, पर वे कट्टर राष्ट्रवादी नहीं थे। वे अंतर्राष्ट्रीयतावाद में राष्ट्रवाद को शामिल करना चाहते थे। गाँधी जी विश्व को एक परिवार बताकर सच्चे अंतर्राष्ट्रीयतावादी बन जाते हैं। सार रूप में गाँधी औचित्य राष्ट्रवाद व व्यापक अंतर्राष्ट्रीयतावाद के समर्थक थे। संबंधी धारणा काफी महत्वपूर्ण है और हर दृष्टिकोण से सराहनीय है।

3. परमाणु शक्ति :

जब अमरीका के द्वारा 6 अगस्त एवं 9 अगस्त, 1945 ई० को क्रमशः जापानी शहर के हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराया गया,

जिससे अपरा धन व जन की हानि हुई। अमेरिका के इस हिंसक कार्यवाही से पूरी मानवता काँप उठी। गाँधी ने अमरीकी कार्यवाही की काफी भर्त्सना की और परमाणु शक्ति पर अपने विचार दिए। गाँधी जी ने दो ट्रक शब्दों में कहा कि परमाणु क्षमता रखना ही पाप है, क्योंकि इसका उद्देश्य ि

हिंसा करना है। अहिंसक व्यक्ति या राष्ट्र को तो हथियार रखना ही नहीं चाहिए। वास्तव में, यदि आप शान्तिप्रिय हैं, तो हथियार रखते ही क्यों है।

गाँधी जी ने कहा कि मैं स्त्री, पुरूष और बच्चों के सर्वनाश के लिए अणु बम के इस्तेमाल को विज्ञान का सबसे क्रुर उपयोग मानता हूँ। इसका प्रतिकार किया है? इन्होनें 29 सितम्बर, 1946 को हरिजन पत्रिका में अपने विचारों को रखते हुए कहा कि "क्या उसने अहिंसा को प्रचलन से बाहर कर दिया है?" नहीं। बल्कि अब मैदान में सिर्फ अहिंसा ही खड़ी रह गई है। यही एक चीज है जिसे अणु बम नष्ट नहीं कर सकता। जब मैंने पहली बार सुना कि अणु बम ने हिरोशिमा का पूरी तरह मिटा डाला है तो मुझमें कोई सिरहन नहीं हुई। बल्कि मैंने स्वयं से कहा, "अगर अब दुनिया अहिंसा को नहीं अपनाती तो मानव जाति को आत्महत्या करनी पड़ेगी।

मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि जब तक बड़े राष्ट्र शोषण की कामना और हिंसा की भावना का त्याग नहीं करेंगे, जिनकी सहज अभिव्यक्ति युद्ध और अणु बम के रूप में होती है, तब तक विश्व में शंति की आशा करना व्यर्थ है। मैंने युद्ध के दौरान आवाज उठाने की कोशिश

की थी और ब्रिटिश जनता, हिटलर और जापान के नाम खुली चिट्ठियाँ लिखी थीं, पर मुझे इसके लिए पंचमांगी करार दे दिया गया।

गाँधी जी ने जिस समय परमाणु शक्ति पर नियंत्रण की बात की, उस समय भले ही उनका विचार "परमाणु शक्तिकरण" को प्रभावित न किया हो, लेकिन बाद के दशकों में परमाणु नीति संबंधी गाँधी के विचार को विश्व के सभी देश स्वीकार करने लगे हैं, तभी तो विश्व समुदाय "सी. टी.बी.टी. (Comprehensive Test Ban Treaty) तथ "एन.पी.टी. (Non-Protiferation Treaty) की बात करता है। इस प्रकार, गाँधी जी के परमाणु नीति प्रशंसनीय है। लेकिन गाँधी जी ने परमाणु नीति को साफ खारिज करने की पहल की, जो अप्रासंगिक है, क्योंकि परमाणु शक्ति से बहुत फायदे भी है।

4. रामराज्य :

गाँधी जी ने एक ऐसे राज्य की परिकल्पना की जो वास्तविक रूप से लोकतांत्रिक देश ही जिसमें क्षुदतम नागरिक भी लंबी–चौड़ी और महंगी प्रक्रिया के बिना शीघ्र न्याय पा सके। इसे ही "गाँधी का रामराज्य" के नाम से जाना जाता है। गाँधी जी ने कहा कि रामराज्य से मेरा अभिप्राय हिंदू राज्य से नहीं है। रामराज्य से मेरा अभिप्राय है दैवी राज्य अर्थात् ईश्वर का साम्राज्य। मेरी दृष्टि में राम और रहीम एक ही है। मैं केवल एक ईश्वर को जानता हूँ और वह है सत्य तथा सदाचार का ईश्वर।

इन्होनें कहा कि मेरी कल्पना के राम कभी इस पृथ्वी पर रहे हो या न रहे हो, रामराज्य का प्राचीन आदर्श निःसंदेह एक सच्चा लोकतंत्र है। कहा जाता है कि रामराज्य में कुत्ते को भी न्याय मिलता था। गाँधी जी कहा करते थे कि मेरे सपने के रामराज्य में राजा और रंक दोनों के अधिकार समान होते थे।

गाँधी जी ने कहा कि राजनीतिक स्वाधीनता से मेरा अभिप्राय "हाउस ऑफ कॉमन्स या रूस के "सोवियत शासन" या इटली के "फासिस्टवादी शासन" या जर्मनी के "नाजी शासन" के अनुकरण से नहीं है। ये प्रणालियाँ उनकी अपनी–अपनी प्रकृति के अनुकूल है। हमारी प्रणाली ये नहीं है। हमारी प्रणाली हमारे अनुकूल होनी चाहिए। वह जो मैं बता सकता हूँ, उससे भी बढ़कर हो सकती है। मैंने उसे रामराज्य कहा है, अर्थात् लोगों की संप्रभुता, जिसका आधार विशुद्ध नैतिक सत्ता हो। गाँधी जी ने कहा कि कई लोगों ने मुझे बार–बार चुनौती दी है कि मैं स्वाधीनता को परिभाषित करुँ। मैं फिर कहता हूँ कि मेरे सपनों की स्वाधीनता का अर्थ है रामराज्य अर्थात पृथ्वी पर ईश्वर के साम्राज्य की स्थापना। उन्होनें कहा कि मैं नहीं जानता कि स्वर्ग में ईश्वर का साम्राज्य कैसा होगा। इतनी दूर की चीज जानने की हमने कामना भी नहीं है। यदि वर्तमान पर्याप्त आकर्षक है तो भविष्य भी उससे बहुत भिन्न नहीं हो सकता।

गाँधी जी ने कहा कि मेरी धारणा के रामराज्य में ब्रिटेन की फौज की जगह कोई राष्ट्रीय अधिपत्य सेना नहीं आएगी। ऐसा देश जिस किसी सेना का शासन हो, चाहे उसकी राष्ट्रीय सेना ही क्यों न हो, कभी नैतिक दृष्टि से स्वतंत्र नहीं माना जा सकता है और इसलिए उसका तथाकथित दुर्बलतम नागरिक कभी अपने पूर्णतम नैतिक उत्कर्ष को प्राप्त नहीं कर सकता। आज के अन्यायपूर्ण असमानताओं की स्थिति में जिसमें मुट्ठी भर लोग ऐश्वर्य भोग रहे हैं और आम आदमी के लिए पेट भरना भी कठिन हैं, रामराज्य कभी नहीं आ सकता। समाजवादियों और अन्य लोगों से मेरा विरोध यही रहा है कि मैं किसी भी स्थायी सुधार के लिए हिंसा का सहारा लेना गलत समझता हूँ। मै। निर्वाण की तुलना रामराज्य अथवा पृथ्वी पर ईश्वर के साम्राज्य के साथ करता हूँ, ब्रिटिश सत्ता के हट जाने से राजराज्य नहीं आएगा। यदि हम अपने हृदयों में अहिंसा के वेश में हिंसा को पालते आ रहे है तो रामराज्य नहीं आ सकता।

उन्होनें कहा कि मेरा हिंदूत्व सभी धर्मों का आदर करना सिखाता है। रामराज्य का रहस्य इसी में निहित है। गाँधी का कहना था कि यदि आप रामराज्य के रूप में ईश्वर का दर्शन करना चाहते हैं तो पहले आपकापे आत्मनिरीक्षण करना होगा। आपको अपने दोषों को हजार गुना बढ़ाकर देखना होगा और अपने पड़ोसियों के दोषों से आंख मूंद लेनी होगी। सच्ची प्रगति का यही एक मार्ग है।

इस तरह गाँधी जी ने पूरे विश्व में शांति व्यवस्था को बनाए रखने के मूल बिंदूओं पर खुलकर अपने विचार रखे। उन्होनें एक ऐसे राज्य की स्थापना की कल्पना की, जहाँ विभिन्न वर्गों, धर्म, संप्रदाय के लोग बिना किसी भय के एक साथ रह सके। एक ओर जहाँ उन्होनें विश्व के विभिन्न राज्यों के तानाशाही शासन व्यवस्था की आलोचना की और कहा कि लोगों को उनकी संप्रभुता मिलनी चाहिए। रामराज्य की कल्पना पृथ्वी पर ईश्वर के साम्राज्य से की जहाँ कोई प्रतिशोध भेद–भाव हिंसा जैसे प्रवृत्ति लोगों में न हो।